Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)

Vol. 3, Issue 1 - 2018

आधुनिक तथा मुक्त उपन्यास के रूप में शेखर: एक जीवनी और केंचा पातर कँपनि: एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. बिउटी दास*

शोध सार (Abstract)

आधुनिक गद्य साहित्य का एक विशेष देन उपन्यास साहित्य है। ईश्वर के सृष्टि में मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जिसमें जिजीविषा है,नवीनता के तलाश करने की जागरूकता है,जिसके परिणामस्वरूप विज्ञान और प्रयुक्तिविद्या के अत्याधुनिक प्रयोगों के द्वारा मनुष्य हर क्षेत्र में हर सम्भव खोज करने की कोशिश की है। नए-नए स्थलों के अनुसंधान यहाँ तक कि ग्रह-नक्षत्र में कदम रखकर नए तथ्यों की अन्वेषण आज सम्भव कर डाला है। हिंदी साहित्य जगत के आधुनिक बोध के अद्वितीय उपन्यासकार अज्ञेय तथा असमिया उपन्यास साहित्य जगत के नवीनता के अन्वेषक प्रफुल्लदत्त गोस्वामी साहित्य के क्षेत्र में ऐसे दो महान सख्त का नाम है जिन्होंने पुरानी घीसी-पीती परम्परा को छोड़कर उपन्यास साहित्य में एक नयेपन की तलाश की है। इसी के परिणामस्वरुप परम्परावादी उपन्यास अर्थात बंध उपन्यास जिसमे आरम्भ, मध्य और शेष होना अनिवार्य था उसी के जगह आज आधुनिक तथा मुक्त उपन्यास ने अपना विशेष स्थान प्राप्त कर लिया है। उपन्यास के क्षेत्र में दोनों उपन्यासकारों ने अपनी-अपनी मौलिकता का परिचय दिया है। अज्ञेय कृत शेखर: एक जीवनी उपन्यास के केंद्रीय पात्र "शेखर" और गोस्वामी कृत केंचा पातर कँपनि उपन्यास के केन्दीय पात्र "उत्पल" दराचलत: दोनों आधुनिक समय के मध्यमवर्गीय परिवार का सच्चा युवा प्रतिनिधि है। दोनों ईमानदार और तत्कालीन समाज में हो रहे नए-नए परिवर्तन के प्रति सदा जागरूक युवक है। अस्थिरता, अकेलापन, निसंगता, पीड़ा आदि आधुनिक युग के अप्रिय देन है। आधुनिक युग के इन तमाम विशेषताओं ने युवा मानसिकता को अत्यधिक प्रभावित किया है। भीड़-भार की दुनिया में रहकर भी अपनी निजी दुनिया में बिलकुल अकेला, उदास, मानसिक अंतर्द्वंद से पूर्ण व्यक्ति के जीवन की अर्थवत्ता की खोज दराचलत:प्रस्तुत उपन्यासों की मूल संवेदना है। जिसप्रकार नदी पर स्थित "द्वीप" की अपने आप में एक निजी अस्तित्व है ठीक उसी प्रकार समाज में रहकर भी व्यक्ति की एक अलग पहचान है, अलग व्यक्तित्व है जो अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए सदा जागरूक रहते हैं। अज्ञेय कृत पात्र शेखर और गोस्वामी कृत पात्र उत्पल में मूलतः यही विशिष्टता है जिसके कारण नायक

*असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, छैगांव कॉलेज, असम, इंडिया।

Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

होने की कोई विशेष गुणवत्ता न होने पर भी वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में भी दोनों पात्रों की प्रासंगिकता युग सापेक्ष हैं। इस जीवन की सिद्धि क्या है? अर्थ क्या है ? जीवन का मूल्य क्या है? दुनिया में ऐसा क्या है जिसके पीछे लोग सारा जीवन भटकते फिरते हैं? इस अर्थवत्ता की खोज का परिणाम ही शेखर: एक जीवनी और केंचा पातर कँपनि उपन्यासों को परकाष्ठा पर पहुँचाता है और यही दोनों उपन्यासों की मूल उपलब्धि है। मेरे शोध पत्र का उद्देश्य आधुनिक तथा मुक्त उपन्यास के रूप में दोनों उपन्यासों का एक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।

सूत्रशब्द: अस्थिरता, अकेलापन, स्वतंत्रता की खोज, चेतनास्रोत, मानसिक अंतर्द्वंद, व्यक्तिगत दस्तावेज।

प्रस्तावना

समय के बदलाव के साथ-साथ सभी क्षेत्र में परिवर्तन होना प्रकृति का नियम है। परिवर्तन में ही एक नवीन सृजन की अपेक्षा की जाती है। यद्यपि हम एक नजर प्रेमचंद पूर्व हिंदी उपन्यास साहित्य की ओर दे तो उस समय उपन्यास केवल लोगों के मनोरंजन हेतु ही प्रस्तुत किया गया था। प्रेमचंद युग में उपन्यास के क्षेत्र में नवीन बदलाव आये। प्रेमचंद के हाथों उपन्यास ने एक नई दिशा प्राप्त कर ली है। मनोरंजन प्रधान उपन्यास के बदले सामाजिक प्रधान उपन्यास साहित्य की ओर अग्रसर हुए और धीरे-धीरे इलाचंद जोशी, जैनेन्द्र, यशपाल आदि उपन्यासकारों ने व्यक्ति मन की गहराई में जाकर मनोविश्लेषणवादी उपन्यास की ओर उन्मुख हुए। ठीक उसी प्रकार असमिया उपन्यास साहित्य में भी अरुणोदय, जोनाकी, आवाहन, रामधेनु आदि पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से निरंतर पूर्णता की ओर अग्रसर हुए। असमिया उपन्यास के क्षेत्र में रजनीकांत बरदलै ने नवीन मार्ग प्रशस्त कर दिया जहाँ उपन्यास लोगों के मनोरंजन हेतु प्रस्तुत हुआ करता था वह सामाजिक उपन्यास के धारा में परिवर्तित होने लगे। आये दिन लोगों के रूचि में वदलाव आये औऱ पाश्चात्य उपन्यास साहित्य की धारा द्वारा प्रभावित होकर परम्परावादी उपन्यास की जगह आधुनिक, मुक्त उपन्यास साहित्य की ओर उन्मुख हुए जहाँ घटना वृतांत की जगह व्यक्ति मन की गहराई में जाकर आतंरिक क्रिया-प्रतिक्रियाओं का मनोवैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास होने लगे।

साधारणत

हिंदी और असमिया उपन्यास साहित्य वंगला और पाश्चात्य उपन्यास साहित्य के द्वारा प्रभावित थे। पाश्चात्य आधुनिक तथा मुक्त उपन्यास साहित्य के मूल प्रणेता वर्जिन वूल्फ के उपन्यास साहित्य ने सभी भाषाओं के उपन्यासकारों को विशेष रूप से प्रभावित किया था। परम्परावादी उपन्यास में कहानी के अंतर्गत आदि, मध्य, अंत का निर्वाह होना अनिवार्य था परन्तु आधुनिक तथा मुक्त उपन्यास में घटना वृतांत की अपेक्षा पात्रों के चेतना में आये प्रवाह को ज्यादा अहमियत दिया जाता है। हमारे प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य आधुनिक तथा मुक्त उपन्यास के रूप में दोनों उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।

सबसे पहले अज्ञेय कृत उपन्यास शेखर: एक जीवनी में कथासंरचना की दृष्टि से किन नवीन संवेदनाए उभरकर आये उसके ऊपर विचार प्रस्तुत

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

करने का प्रयास किया गया है। अज्ञेय कृत शेखर:एक जीवनी (भाग-१. भाग-२) दराचलत: केंद्रीय पात्र शेखर के घनीभूत वेदना की एक ही रात में देखे हुए विजन को शब्दबद्ध करने का प्रयास है। इसमें कोई एक निश्चित घटना प्रवाह का आंकलन नहीं किया गया है। केंद्रीय पात्र शेखर के चेतनस्रोत में क्रमहीन रूप में जो भी स्मृतियाँ आये हैं वही उपन्यास के कथावस्तु के रूप में परिवर्तित हो गए। शेखर आधुनिक मध्यमवर्गीय भारतीय परिवार का युवा प्रतिनिधि है जिसमे पात्र के आशा, निराशा, उद्विग्नता, अहं, अकेलापन, मानसिक अंतर्द्व्न्द आदि आतंरिक क्रिया-प्रतिक्रिया आदि संवेदनाओं का अन्वेषण किया गया है।

उपन्यास का प्रारम्भ केंद्रीय पात्र शेखर के फाँसी के अनुभव से होता है। जीवन के अंतिम पड़ाव में उपस्थित शेखर फिर से एक बार अपने अतीत जीवन का अवलोकन करते हैं। इस अवलोकन में शेखर के स्मृतिपट पर सबसे पहले शशि, सरस्वती, शारदा, बाबा मदनसिंह, विद्याभूषण, रामदेव आदि न जाने कितने लोगों की झलक उसके मानस पट को उद्वेलित कर रखा है।

फ्रायड के मनोविज्ञान के अनुसार मनुष्य अहं, भय और सेक्स इन तीन प्रवृत्तिओं के द्वारा परिचालित होते हैं। शेखर शिशु अवस्था से ही इन प्रवृत्तिओं के द्वारा पूर्ण रूप से प्रभावित थे। स्वतंत्रता की खोज दराचलत: शेखर के जीवन का मूल उद्देश्य है। जब भी उनके स्वतंत्रता पर आघात पहुँचते हैं वह उसके विरूद्ध प्रवल विद्रोह करने में भी नहीं झिझकते हैं। इस संदर्भ में हम डॉ.सत्यपाल सिंह के मत का उल्लेख इस प्रकार कर सकते हैं -

'उसे लेटरबॉक्स पर बैठकर दूसरों के पॉव को कुचलते हुए मानो विजेता बनकर-भाग खड़ा होना उसकी अहं ही व्यक्त करता हैं, अजायबघर के नकली बाघ से भागना भय की प्रेरणा को निदर्शित करता हैं और किसी अनुचित वर्जित दृश्य को देखकर वैसे ही भावना का अनुभव करना उसकी काम प्रेरणा को

'[अज्ञेय का उपन्यास साहित्य, डॉ.दुर्गा शंकर मिश्रा, पृष्ठा:२७७]

शेखर के असाधारण प्रेम की अनुभूतिओं के साथ भी पाठक साक्षात् होते हैं। बहन सरस्वती के प्रति लगाव, युवा अवस्था में दक्षिण भारत के युवती शारदा के प्रति प्रेम की अनुभूतियाँ का अंकुश, मौसेरी बहन शशि के प्रति आतंरिक प्रेम भावना आदि घटनाएँ शेखर के जीवन को पुष्ट करता है। शशि के आतंरिक त्याग और प्रेम भावनाएँ शेखर के सम्पूर्ण जीवन को ही बदल देते हैं। वही शेखर के समस्त कर्म की शक्ति है, प्रेरणा है, जीने का सहारा है। जीवन के अंतिम क्षण में उपस्थित शशि अपने अंतरंग भावनाओं को पत्र के माध्यम से इस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं-

"उस अपने भविष्य की खोज में यदि तुम्हे मेरी याद आए तो अपने को इसलिए अपराधी मत ठहराना कि मेरे बिना तुम अकेले आगे चल सके; तुम चल सके यह मेरी पराजय नहीं, मेरी अन्तिम विजय होगी"

[शेखर: एक जीवनी पृष्ठ-२५०]

शशि की अप्रत्याशित मृत्यु ने शेखर को निश्चित रूप से झकझोर कर दिया था परन्तु शशि के प्रति प्रेम भावना और स्वाधीनता संग्राम के प्रति दायित्व तथा कर्तव्यबोध ने उसे लाहौर जाने के लिए विवश कर दिया था। लाहौर जाने के पश्चात शेखर के जीवन में क्या हुआ? ऐसी कौन सी कार्य के कारण शेखर को फाँसी की सजा सुनाई गयी? क्या सचमुच शेखर दोषी थे? क्या अंत में शेखर को फाँसी हो गया था? इन सारी सवालों से पाठक को उपन्यास के अंत तक घिरे रखकर उपन्यासकार ने पाठक समुदाय को स्वंय निष्कर्ष निकालने की स्वतंत्रता प्रदान की है। वर्जिन वूल्फ के मिसेज. डेलवे उपन्यास में उपन्यासकार ने

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

उपन्यास के अंत में पाठकों के लिए बहुत सारे सवालों को छोड़कर ऐसे ही उपन्यास की समाप्ति करते हैं। जन्मदिन के पार्टी में उपस्थित डेलवे भीड़ में भी वह निसंग, अकेलापन का अनुभव करते हैं। मानसिक अंतर्द्व्न्द से पूर्ण डेलवे बीच में ही पार्टी छोड़कर अपने कमरे में चले जाते हैं और उपन्यास के अंत में डेलवे की पार्टी में पुनः उपस्थिति बहुत सारे सवालों का संकेत देते हैं। उपन्यास के अंत में उपस्थित परिचित डेलवे न होकर दराचलतः डेलवे का एक पर्यवसित रूप ही है उपन्यासकार की इस विशेष संकेत से पाठक की जिज्ञासावृत्ति और भी तीव्र हो उठते हैं। ठीक उसी तरह शेखर:एक जीवनी उपन्यास के अंत में भी पाठक जिज्ञासाओं में रह जाते हैं। क्या सही में उपन्यास का अंत हुआ है ? इस धुंधलेपन में ही उपन्यास का अंत होता है।

असमिया उपन्यास साहित्य के आधुनिक तथा मुक्त उपन्यास धारा के उपन्यास गोस्वामी कृत केंचा पातर कँपनि है। प्रस्तुत उपन्यास के केंद्रीय पात्र उत्पल मध्यमवर्गीय समाज का युवा प्रतिनिधि है। यहाँ पात्र के अस्थिरता, अकेलापन, शंका, भय, आन्तरिक अंतर्द्व्न्द आदि भावनाओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। केंद्रीय पात्र उत्पल के चेतनास्रोत उपन्यास का मुख्य उपजीव्य है। इसमें निर्दिष्ट कोई कहानी के बदले जीवन यात्रा के उपरान्त पात्र के अनुभव वैचित्य जिसमे आशा-निराशा, सफलता-विफलता, पूर्णता-अपूर्णता प्राप्ति की एक लेखा-जोखा का वास्तविक चित्रण है।

प्रस्तुत उपन्यास का प्रारम्भ केंद्रीय पात्र उत्पल के मानसिक अंतर्द्व्न्द से होता है। अपनी इच्छा के विरुद्ध होकर पिता के आज्ञानुसार फुलवारी गांव में टेक्स संग्रह के लिए गए उत्पल के साथ उसी समय पाठक परिचित हो उठते हैं। उत्पल एक ऐसा पात्र है जिसमे नायक होने के कोई विशेष गुण विद्यमान नहीं है और घटना के रूप में उपन्यास में उत्पल कुछ खास ऐसे कार्य में नियुक्त भी नहीं हुए जिसके कारण नई पीढ़ी के लिए वह एक आदर्श बन सकें। प्रस्तुत उपन्यास जीवन प्रवाह में ठोकरे खा-खाकर इधर-उधर भटकते हुए युवक की स्मृतिपट पर क्रमहीन रूप में आए विभिन्न घटना-परिघटनाओं का संचयन मात्र हैं। तत्कालीन युगीन वातावरण के प्रभाव चरित्र के ऊपर किस प्रकार प्रभावान्वित किया था उसका यथार्थ चित्रण भी उपन्यास में प्रतिफलित हुआ है।

प्रेम, विवाह, नौकरी, व्यवसाय सभी क्षेत्र में उत्पल अस्थिर है। समय पर सटिक सिद्धांत लेने में असमर्थ उत्पल केवल यायावरी जीवन व्यतीत करते हैं। क्षण की अनुभूतिओं को महत्व देने के कारण फुलवारी गांव के परिचित महिला बहागी के प्रति भी आकर्षण का अनुभव करते हैं, गौरीपुर के बंगाली ब्राह्मण युवती नीलिमा के प्रति प्रगाढ़ प्रेम की अनुभूति, शिक्षयित्री मिनती के साथ शारीरिक सम्बन्ध तथा का-ड्रप जैसे खाँसी देहोपजीविनी के साथ समय व्यतीत करने में उत्पल कोई संकोच अनुभव नहीं करते। व्यवसाय के लिए जो मानसिक स्थिरता की आवश्यकता है वह उत्पल की मानसिकता में अभाव परिलक्षित होता है। इसलिए कोई भी व्यवसाय में उन्हें सफलता प्राप्त नहीं होते हैं। नौकरी में भी आवश्यकीय लगाव के अभाव में अस्थायी रूप में प्राप्त क्लर्क की नौकरी भी गवा बैठते हैं। अंत में उत्पल का यह सिद्धांत लेना कि वह अपने शैशव के सुनहरे पल बिताये ग्राम्य जीवन के प्राकृतिक आभा से पूर्ण वातावरण में फिर से लौट जाए इस विचार से ही उपन्यास का समापन होता है। दराचलत: उपन्यास की समाप्ति में भी पाठक के मन में बहुत सारे सवाले उलझन पैदा करते हैं। मानसिक अंतर्द्व्न्द से पूर्ण, अत्यंत अस्थिर प्रकृति के युवक उत्पल का उपन्यास के अंत में लिया हुआ सिद्धांत में क्या वह अटल रह पाए ? क्या वह अपने लक्ष्य में सफल हुए? इत्यादि प्रश्नातीत सवाले पाठक के

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

जिज्ञासाओं का शमन करने की असमर्थता में ही उपन्यास का अंत होता है।

तुलनात्मक दृष्टिकोण

उपरोक्त संक्षिप्त वृतांत के पश्वात हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आधुनिक तथा मुक्त उपन्यास के संदर्भ में दोनों उपन्यासकारों के उपन्यासों में काफी समानताये परिलक्षित होता हुआ दिखाई पड़ता है। प्रस्तुत उपन्यासों में समानताओं के अंतर्गत निम्नांकित बिंदु सामने आते हैं-

मुक्त उपन्यास, आधुनिक जीवनबोध, चेतनास्रोत अथवा विवेक के अंतहीन प्रवाह, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण, प्रत्यावर्तन शैली, नामाकरण में प्रतीकात्मकता इत्यादि।

पारम्परिक उपन्यासों में जहाँ सफलता के क्षेत्र में उपन्यासों के तत्वों में से कथावस्तु का अहम भूमिका रहता है जहाँ कथावस्तु के अंतर्गत आदि, मध्य और अंत होना अनिवार्य माना जाता था। जिसके कारण उपन्यासकार अन्य औपन्यासिक उपादानों को नजरअंदाज करने पर विवश हो जाते हैं। लेकिन आधुनिक तथा मुक्त उपन्यास के क्षेत्र में एक उपन्यासकार बिलकुल स्वतंत्र होकर अपने हृदयगत विचार, अनुभूति, दर्शन, चिंतन-मनन आदि भावनाओं को खुले रूप से निर्दिष्ट कहानी के बिना भी उपन्यास के पात्रों के माध्यम से सम्प्रेषित करने की आजादी प्राप्त करते हैं। आधुनिक तथा मुक्त उपन्यास में घटना वृतांत की उपेक्षा पात्रों के आंतरिक क्रिया-प्रतिक्रियाओं को अत्यधिक अहमियत दिया जाता है। सही अर्थ में हमें आलोच्य प्रस्तुत दोनों उपन्यासों में यही रस आस्वादन करने को मिलते हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत आधुनिक युग के भारतीय युवा मानसिकता के जीवन शैली में काफी परिवर्तन आये। भीड़ में होते हुए भी सभी अपने-अपने निजी दुनिया में व्यस्त है। किसी से कोई लेन-देन नहीं है जिसके फलस्वरूप पारिवारिक विघटन. रिश्तों में दरार आदि की सघनताये व्यापक रूप में उपलब्ध हुआ नजर आते हैं। अस्थिरता, अकेलापन, निसंगता, उदासीनता, शंका, भय, सन्देह आदि आधुनिक जीवन के इन तमाम विशेषताओं ने विशेष रूप से आधुनिक युवापीढ़ियों को घेरे रखा है। शेखर और उत्पल दोनों आधुनिक विषन्न युवक है। उन दोनों के चारित्रिक विशेषताओं में पाठक आधुनिक जीवन बोध के सारे उपादान प्रत्यक्ष करते हैं|

मनुष्य के चेतना के स्तर बहु-आयामी है। एक चेतन अवस्था में स्थित होने के क्षण में ही चेतना के दूसरी स्तर पर अनेक चेतनाएँ कार्यरत रहते हैं। विवेक के इस अंतहीन प्रवाह दराचलतः आलोच्य दोनों उपन्यासों की प्राण शक्ति है। शेखर: एक जीवनी उपन्यास में हम देखते हैं कि जीवन के अंतिम पड़ाव में उपस्थित शेखर अपने अतीत जीवन के अवलोकन के क्षण सबसे पहले शशि की स्मृतियाँ उसके चेतनता को स्पर्श करते हैं। परन्तु पात्र के चेतना के दूसरी स्तर पर उसके शैशव से युवा काल तक अन्य अंतहीन स्मृतियाँ भी उनके चेतना को उसी समय उद्वेलित कर रखते हैं। ठीक उसी प्रकार केंचा पातर कँपनि उपन्यास में भी उत्पल चेतना के किसी एक स्तर पर व्यस्त होने की स्थिति में ही अन्य बहु-आयामी चेतनाएँ एक ही समय क्रिया कर रहे हैं। बहागी के साथ वार्तालाप करते समय उनके चेतना में नीलिमा की यादें आना, का-ड्राप की संग में व्यतीत क्षण में उसके चेतना में फिर से नीलिमा की यादें आना आदि उनके चेतना के अंतहीन प्रवाह को ही दर्शाता हैं।

बदलते परिस्थिति, बदलते समय, बदलते मानसिकता के साथ अपने-अपने रूचि में भी परिवर्तन आना साधारण सी बात है। जहाँ एक समय लोगों की रूचि ऐतिहासिक, जासूसी,

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

सामाजिक आदि घटना प्रधान उपन्यासों की ओर थे वही समय के निरंतर प्रवाह में धीरे-धीरे लोगों की रूचि में वदलाव आये। वे कुछ नयापन देखना चाहते हैं। परिणामस्वरूप लोगों की रूचि मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की ओर बढ़े। वाह्यिक दृष्टिकोण के बदले व्यक्ति मन के आतंरिक क्रिया-प्रतिक्रियाओं को जानने की अभिलाषाएँ लोगों में तीव्रतर हो उठे। अतः उपन्यासों में व्यक्ति के अंतर्मन की अनुभूतिओं का मनोवैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण करने की प्रयास होने लगे। आलोच्य दोनों उपन्यास मनोवैज्ञानिक उपन्यास का उत्कृष्टतम निदर्शन है। शेखर: एक जीवनी उपन्यास मूलतः शेखर के मन की अनुभूतिओं का एक एकांत व्यक्तिगत दस्तावेज है। शेखर के अंतर्मन में आये विभिन्न विचार, अनुभूतिओं के समूह को मनोवैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण किया गया है। पाठक शेखर के अनुभूतिओं के साथ एकात्म हो जाते है, तादात्म अनुभव करते है। ऐसा लगता है कि उसके कार्य को प्रत्यक्ष देख रहे हैं। शेखर एक आधुनिक युवा के सम्पूर्ण जीवन का जीवंत प्रतिबिम्ब है।

शेखर के अपने जीवन को देखने की दृष्टिकोण, जीवन में घटित विभिन्न घटना परिक्रमा के प्रति उसकी घोर ईमानदारिता पाठक के अनुभूति क्षेत्र को झकझोर कर डालते हैं। ठीक उसी प्रकार केंचा पातर कँपनि उपन्यास में जीवन के प्रवाह में भटकते हुए युवक उत्पल के विचित्र अनुभव, मानसिक ऊहापोह में फँसे व्यक्ति की जीवन गाथा का मनोवैज्ञानिक चित्रण प्रस्तुत किया गया है। मनुष्य दैनंदिन जीवन-यात्रा के दौरान स्थान, काल, परिस्थितिओं से अनेक प्रकार के टकराहट का सामना करते हैं और उसके समानांतर अस्थिरता, अकेलापन, निसंगता, शंका, भय आदि मनोग्रंथिओं से लगातार व्यक्ति का संघर्ष होता है और उसमें ही व्यक्ति के जीवन की पूर्णता, अपूर्णता का अर्थ भी निहित रहता है। उत्पल के माध्यम से उपन्यासकार एक व्यक्ति के अंतरंग उस अभिन्नतम जीवन सत्य को उद्‌घाटन करने का एक पूर्ण प्रयास है।

सृजन करनेवाले कलाकार की सफलता इस बात पर दी जाती है कि उनके द्‌वारा निर्मित कला को किस ढंग से उपस्थापन किया गया है। क्योकि उपस्थापन शैली कि विशिष्टता ही किसी एक कला को परकाष्ठा तक पहुँचा सकता है। आधुनिकतावादी उपन्यासकार भी परम्परावादी बंध उपन्यास की प्रच्छाया से दूर हो कर उपन्यास लेखन की प्रवृत्ति में नए-नए संसाधनों का सहारा लेते रहे। लेखक अपनी निजी विचारानुभव की अभिव्यक्ति के लिए सम्पूर्ण स्वतंत्र एवं मुक्त है। शेखर: एक जीवनी उपन्यास के संदर्भ में अगर बात करे तो सम्पूर्ण कथा प्रत्यावर्तन शैली के माध्यम से ही उपस्थापन किया गया है। अतीत जीवन को दुबारा जीने की कोशिश में वह फिर से एक बार उनके शैशव, युवा काल तक लौट जाते हैं। इस प्रवाह में वह केवल नदी की धारा के समान बहता जाता है, बहता जाता है। अपने जीवन के इन छोटी-छोटी खंडित स्मृतिओं को प्रत्यावर्तन के माध्यम से इतने सटीक रूप से उपस्थापन करने की कला अपने आप में विशिष्ट है। दूसरी ओर केंचा पातर कँपनि उपन्यास में भी उपन्यासकार स्थान-स्थान पर प्रत्यावर्तन शैली का सहारा लिया है। यथा- नीलिमा से प्रथम साक्षात् के क्षण की अनुभूति के विवरण के परिपेक्ष्य में, असम के इतिहास प्रसिद्ध गौरीपुर शहर और जमींदार के पुरानी प्रासाद आदि के विवरण के परिपेक्ष्य में इस शैली का सुंदर प्रयोग हुआ है।

आधुनिक युग की सबसे बड़ी संकट अस्तित्व को लेकर है। सामाजिक प्राणी के बदले व्यक्ति अपनी निजी अस्तित्व को लेकर ज्यादा सचेत है जिसके बदौलत जीवन में उलझन की मात्रा भी अधिकतर होता चला गया। जटिल जीवन प्रणाली में एकसाथ सहवास करते-करते लोग अपनी आंतरिक अनुभूतिओं को साधारण भाषा में प्रत्यक्ष्य रूप से

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

अभिव्यक्त करने में असमर्थता का अनुभव करने लगे और इसके परिणाम स्वरूप सांकेतिक या प्रतीकात्मक भाषा के माध्यम से हृदयगत विचार को व्यक्त करने में या समझने की समर्थता का अनुभव करने लगे। प्रस्तुत दोनों उपन्यासों में यही संकेत मिलते हैं। शेखर: एक जीवनी उपन्यास में ऐसे सांकेतिक या प्रतीकात्मकता का अनेकों उदाहरण मिलते हैं यथा- शेखर के यौन वासना को दिखाने के लिए उपन्यासकार ने स्वप्न दर्शन के माध्यम से विभिन्न सांकेतिक अर्थ एंव प्रतीकों का सहारा लिया हैं। उसमें प्रयुक्त ऊँट, मरुस्थल, प्यासी आँखें, पानी आदि शब्द एक-एक सांकेतिक अर्थ वहन करता है। दूसरी ओर केंचा पातर कँपनि उपन्यास के नामकरण में ही प्रतीकात्मकता है। उपन्यास में प्रयुक्त "केंचा पात" शब्द का सांकेतिक अर्थ कच्चापन, सजीवता का सूचक अर्थात युवा अवस्था की ओर संकेत के संदर्भ में और "कँपनि" अर्थात स्पंदन के सांकेतिक अर्थ में उपयोग हुआ है।

प्रस्तुत दोनों उपन्यासों में इतने समानता होने के बावजूद भी अनेक असमानताएँ परिलक्षित होती हैं। शेखर: एक जीवनी उपन्यास में शेखर अपने समय के समस्त सामाजिक बंधन के ऊपर चोट पहुँचाता है, जातिवाद, वर्णवैषम्य, अंधविश्वास, कुसंस्कार के प्रति केवल घृणा ही नहीं बल्कि उसके प्रवल विरुद्ध भी करते है। अपने उस युगीन वातावरण में ब्राह्मनों के लिए संरक्षित होस्टल छोड़कर हरिजनों के होस्टल में ठहरना अपने समय के व्यवस्थाओं के प्रति करारा व्यंग्य को ही दर्शाता है। केंचा पातर कँपनि उपन्यास में भी उत्पल पारम्परिक समाजिक बंधन के प्रति सचेत तो है लेकिन शेखर की तरह उत्पल में उन सामाजिक कुप्रथाओं के प्रति खुलेयाम विरुद्ध करने की मानसिक स्थिति नहीं है। समाज में प्रचलित जातिगत भिन्नताओं के कारण नीलिमा को जीवन संगी बनाने में वह असमर्थ रहे। हमारी दृष्टि में एक आधुनिक युवक होने के नाते उत्पल उस बंधन को तोड़ने में साहसिक कदम उठाना चाहिए था।

दोनों उपन्यासों की पृष्ठभूमि के संदर्भ में भी काफी असमानताएँ है। भौगलिक दृस्टि में दोनों उपन्यासकार भारत के अलग अलग प्रान्त के रहनेवाले है। अज्ञेय जहाँ उत्तर भारत से संबंध रखते है वही गोस्वामी का सम्बन्ध पूर्वोत्तर के असम प्रान्त से है। शेखर: एक जीवनी उपन्यास के संदर्भ में अगर बात करे तो अज्ञेय ने एक व्यापक क्षेत्र से केंद्रीय पात्र को जुड़ने की कोशिश की है। उपन्यास का पात्र कभी उत्तर भारत के विभिन्न जगहों से जुड़े तो कभी दक्षिण भारत के विभिन्न जगहों से। दूसरी ओर गोस्वामी के उपन्यास के केंद्रीय पात्र उत्पल का क्षेत्र व्यापक न होकर असम के शिलंग, धुबरी, गौरीपुर, फुलवारी जैसे जगहों पर ही सीमित होते हैं। शेखर एक ऐसा पात्र है कि जीवन के कठिनतम परिस्थितिओं में भी वह अपने बनाये हुए सिद्धांत पर स्थिर रहता है। माँ का एक वाक्य "मुझे तो इसका भी विश्वास नहीं" शेखर के हृदय में जाकर इसप्रकार चुभता है कि वह अपने सम्पूर्ण जीवन में भी उसको भुला नहीं पाए बल्कि माँ की अंतिम विदाई के समय भी वह शामिल होने की जरा सी भी कोशिश करता हुआ हमे नजर नहीं आया। उस समय के सामाजिक बंधन को उपेक्षा करके अपनी ही मौसेरी बहन शशि के संग एकसाथ रहने का सिद्धांत लेना अपने-आप में शेखर के लिए बहुत बड़ा चुनौती था। दूसरी ओर उत्पल के जीवन में जब भी कोई चुनौतियाँ आते हैं वह उससे केवल भागता हुआ हमें नजर आता है।

निष्कर्ष

अज्ञेय कृत शेखर: एक जीवनी और गोस्वामी कृत केंचा पातर कँपनि अपने अपने समय के दोनों युगांतकारी उपन्यास है। स्वाधीनता के समसामयिक वातावरण के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

किया गया दोनों उपन्यासों के ऊपर युगीन वातावरण के प्रभावों को अनदेखा नहीं किया जा सकता। द्वितीय विश्वयुद्ध के नवीन मोड़ ने मध्यमवर्गीय लोगों के जीवन शैली को व्यापक रूप में प्रभावित कर रखा था। भारत के अलग-अलग प्रान्त में रहनेवाले दोनों उपन्यासकारों ने अचानक आये इस परिवर्तन को केवल नज़दीकी से प्रत्यक्ष ही नहीं किया था बल्कि ये दोनों पूर्ण रूप से आक्रांत भी थे। अतः यह सहज ही अनुमेय है कि उनलोगों के रचनाओं में तत्कालीन वातावरण का असर पड़ना स्वाभाविक ही था। उससमय पाश्चात्य आधुनिक तथा मुक्त उपन्यास साहित्य के प्रवाह ने भारतीय भाषा साहित्य को भी अपने आवेश में ले लिया था। प्रस्तुत उपन्यास में उल्लेखित उपन्यासकार भी इससे अछूते नहीं थे। एक स्वाभाविक पारम्परिक रीत में चले आ रहे सामाजिक व्यवस्था को परिवर्तन की कसौटी पर खड़ा करना, मध्यमवर्गीय जीवन शैली को नवीन परिवर्तन के लहर में उँड़ेलना इतना आसान नहीं था। अज्ञेय और गोस्वामी ने अपने समय के समस्त सामाजिक संस्कारों को तोड़कर शेखर, उत्पल जैसे युगांतकारी चरित्र का निर्माण किया था। युगानुरूप परिदृश्य के परिप्रेक्ष में दोनों उपन्यासकारों ने जो साहसी कदम उठाये निसंदेह इसके लिए दोनों को बहुत बड़ा श्रेय जाता है। वस्तुतः हमारे दृष्टि में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय और प्रफुलदत्त गोस्वामी केवल दो व्यक्ति ही नहीं है बल्कि दो अनुष्ठान कहना अधिक युक्तिसंगत होगा और निश्चित रूप से पुरे साहित्य जगत में लोगों के हृदय में वह दोनों एक आइकॉन के रूप में सदा-सदा के लिए स्मरणीय रहेंगें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. प्रफुल्लदत्त गोस्वामी, केंचा पातर कँपनि, लॉयर्स बुक स्टल (नाइन्थ एडिशन), २००८.
[2]. सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय, शेखर: एक जीवनी (भाग-१)१९४१ नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २००१.
[3]. सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय, शेखर: एक जीवनी (भाग-२)१९४४ नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २००४.
[4]. डॉ. नारायण दास, डॉ. परमानंद राजबंशी. एडिटेड. असमिया साहित्यत पाश्चात्य प्रभाव, चंद्र प्रकाश, २००९.
[5]. गोविन्द प्रसाद शर्मा, उपन्यास आरु असमिया उपन्यास, स्टूडेंट्स स्टोर्स, १९५५.
[6]. डॉ. देव कृष्ण मौर्य, उपन्यास शिल्पी अज्ञेय, शैलजा प्रकाशन, २००६.
[7]. डॉ. शंकर वसंत मुद्गल, अज्ञेय का काव्य-भाव एवं शिल्प, अमन प्रकाशन, १९९८.
[8]. डॉ. दुर्गाशंकर मिश्रा, अज्ञेय का उपन्यास साहित्य, विद्यामंदिर, २००५.

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501